

राष्ट्रीय स्वरूप

शाकभाजी अनुभाग में तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण का शुभारंभ

कानपुर 7 यूनिडो जापान द्वारा प्रायोजित आईमेक हाइड्रोपोनिक्स उत्पादन प्रणाली विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे बैच का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग, कल्याणपुर पर किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ राजेश कुमार, निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा वर्चुअली की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ राजेश कुमार द्वारा बताया गया कि जापान में विकसित आईमेक तकनीक कृषि आधारित उद्यमिता विकास करने में सहायक होगी। इस तकनीक में प्राकृतिक संसाधनों का न्याय संगत प्रयोग होता है जिससे यह तकनीक पर्यावरण अनुकूल है। उन्होंने संरक्षण खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मिट्टी रहित माध्यम में सब्जी

उत्पादन करने से उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पाद तैयार होगा। तथा सब्जियों का पोषक मूल्य भी अधिक होगा। कार्यक्रम में सौरु हीरात्सुका, यूनिडो, जापान द्वारा बताया गया कि प्रशिक्षण के माध्यम से

कौशल विकास किया जाएगा जो रोजगार सृजन में सहायक होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के कोर्स निदेशक डॉ पी के सिंह द्वारा कहा गया कि जापानी तकनीक आईमेक का प्रयोग कर पारंपरिक

तक पानी की बचत की जा सकती है। शाकभाजी अनुभाग के प्रभारी डॉ केशव आर्य द्वारा कहा गया कि आईमेक तकनीक को समस्या ग्रस्त मिट्टियों तथा रेतीली भूमियों में भी प्रयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम के कोर्स समन्वयक डॉ राजीव द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया गया कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न शोध संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली से संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम में डॉ हिरोशी योशिओका, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ सुशील यामाहामोतो, जापान डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, डॉ वी के त्रिपाठी अधिष्ठाता उद्यान संकाय उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों के रूप में 6 उद्यमी, 20 प्रगतिशील किसान तथा 11 शोध छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।



उद्यमियों, किसानों तथा शोध छात्रों का हाइड्रोपोनिक प्रणाली की तुलना में 90%

तकनीक पर्यावरण अनुकूल और संरक्षण खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता

कानपुर, 26 मई। यूनिडो जापान की ओर से प्रायोजित आईमेक हाइड्रोपोनिक्स उत्पादन प्रणाली विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे बैच का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग, कल्याणपुर पर किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ राजेश कुमार, निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा वर्चुअली की गई। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ राजेश कुमार ने कहा कि जापान में विकसित आईमेक तकनीक कृषि आधारित उद्यमिता विकास करने में सहायक होगी। इस तकनीक में प्राकृतिक संसाधनों का न्याय संगत प्रयोग होता है जिससे यह तकनीक पर्यावरण अनुकूल है। उन्होंने संरक्षण खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मिट्टी रहित माध्यम में सब्जी उत्पादन करने से उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पाद तैयार होगा। तथा सब्जियों का पोषक मूल्य भी अधिक होगा। कार्यक्रम में सुरु हीरात्सुका, यूनिडो, जापान द्वारा बताया गया कि प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यमियों, किसानों तथा शोध छात्रों का कौशल विकास किया जाएगा जो रोजगार सृजन में सहायक होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के कोर्स निदेशक डॉ पी के सिंह द्वारा कहा गया कि जापानी तकनीक आईमेक का प्रयोग कर



कार्यक्रम में शामिल सीएसए के वैज्ञानिक।

पारंपरिक हाइड्रोपोनिक प्रणाली की तुलना में 90 प्रतिशत तक पानी की बचत की जा सकती है। शाकभाजी अनुभाग के प्रभारी डॉ केशव आर्य ने कहा कि आईमेक तकनीक को समस्या ग्रस्त मिट्टियों तथा रेतीली भूमियों में भी प्रयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों के रूप में 6 उद्यमी, 20 प्रगतिशील किसान तथा 11 शोध छात्र-छात्राए शामिल हुए। कार्यक्रम के कोर्स समन्वयक डॉ राजीव ने कहा कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न शोध संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली से संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम में डॉ हिरोशी योशिओका, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ सुशील यामाहामोतो, जापान डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, डॉ वी के त्रिपाठी अधिष्ठाता उद्यान संकाय उपस्थित रहे।

साकभाजी अनुभाग में तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ...

दि ग्राम दुडे, कानपुर।

संजय मोय

यूनिटो जापान द्वारा प्रायोजित आईमैक हाइड्रोपोनिक्स उत्पादन प्रणाली विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे बैच का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग, कल्याणपुर पर किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ राजेश कुमार, निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा वचुअली की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ राजेश कुमार द्वारा बताया गया कि जापान में विकसित आईमैक तकनीक कृषि आधारित उद्यमिता विकास करने में सहायक होगी। इस तकनीक में प्राकृतिक संसाधनों का न्याय संगत प्रयोग होता है जिससे यह तकनीक पर्यावरण अनुकूल है। उन्होंने संरक्षण खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मिट्टी रहित माध्यम में सब्जी उत्पादन करने से उच्च गुणवत्ता



युक्त उत्पाद तैयार होगा। तथा सब्जियों का पोषक मूल्य भी अधिक होगा। कार्यक्रम में सुरु हीरात्सुका, यूनिटो, जापान द्वारा बताया गया कि प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यमियों, किसानों तथा शोध

छत्रों का कौशल विकास किया जाएगा जो रोजगार सृजन में सहायक होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के कोर्स निदेशक डॉ पी के सिंह द्वारा कहा गया कि जापानी तकनीक आईमैक का प्रयोग कर

पारंपरिक हाइड्रोपोनिक प्रणाली की तुलना में 90% तक पानी की बचत की जा सकती है। शाकभाजी अनुभाग के प्रभारी डॉ केशव आर्य द्वारा कहा गया कि आईमैक तकनीक को समस्या प्रस्त मिट्टियों तथा रेतीली भूमियों में भी प्रयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम के कोर्स समन्वयक डॉ राजीव द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया गया कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न शोध संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली से संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम में डॉ हिरोशी योशिओका, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ सुरील यामाहामोतो, जापान डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, डॉ वी के त्रिपाठी आंध्रप्रदेश उद्यान संकाय उर्वरस्थ रहे। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों के रूप में 6 उद्यमों, 20 प्रतिशाल किसान तथा 11 शोध छत्र-छत्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

दैनिक

आज का कानपुर



हिन्दी दैनिक



उड़ानों का शहर



साकभाजी अनुभाग में तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

आज का कानपुर

कानपुर । यूनिडो जापान द्वारा प्रायोजित आईमेक हाइड्रोपोनिक्स उत्पादन प्रणाली विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे बैच का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग, कल्याणपुर पर किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ राजेश कुमार, निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा वर्चुअली की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ राजेश कुमार द्वारा बताया गया कि जापान में विकसित आईमेक तकनीक कृषि आधारित उद्यमिता विकास करने में सहायक होगी। इस तकनीक में प्राकृतिक संसाधनों का न्याय संगत प्रयोग होता है। जिससे यह तकनीक पर्यावरण अनुकूल है। उन्होंने संरक्षण खेती को बढ़ावा देने की



आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मिट्टी रहित माध्यम में सब्जी उत्पादन करने से उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पाद तैयार होगा। तथा सब्जियों का पोषक मूल्य भी अधिक होगा। कार्यक्रम में सुरु हीरात्सुका, यूनिडो, जापान द्वारा बताया गया कि प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यमियों, किसानों तथा शोध छात्रों का कौशल विकास किया जाएगा जो रोजगार सृजन में सहायक होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के कोर्स निदेशक डॉ पी के सिंह

द्वारा कहा गया कि जापानी तकनीक आईमेक का प्रयोग कर पारंपरिक हाइड्रोपोनिक प्रणाली की तुलना में 90% तक पानी की बचत की जा सकती है। शाकभाजी अनुभाग के प्रभारी डॉ केशव आर्य द्वारा कहा गया कि आईमेक तकनीक को समस्या ग्रस्त मिट्टियों तथा रेतीली भूमियों में भी प्रयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम के कोर्स समन्वयक डॉ राजीव द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया गया कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान

विभिन्न शोध संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली से संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम में डॉ हिरोशी योशिओका, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ सुशील यामाहामोतो, जापान डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, डॉ वी के त्रिपाठी अधिष्ठाता उद्यान संकाय उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों के रूप में 6 उद्यमी, 20 प्रगतिशील किसान तथा 11 शोध छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कार्य और शिक्षक
बनेंगे हिस्सा



सच की अहमियत

शाक-भाजी अनुभाग में तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

कानपुर - यूनिडो जापान द्वारा प्रायोजित आईमेक हाइड्रोपोनिक्स उत्पादन प्रणाली विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम



के दूसरे बैच का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ राजेश कुमार, निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा वर्चुअली की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ राजेश कुमार द्वारा बताया गया कि जापान में विकसित आईमेक तकनीक कृषि आधारित उद्यमिता विकास करने में सहायक होगी। इस तकनीक में प्राकृतिक संसाधनों का न्याय संगत प्रयोग होता है जिससे यह तकनीक पर्यावरण अनुकूल है। उन्होंने संरक्षण खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मिट्टी रहित माध्यम में सब्जी उत्पादन करने से उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पाद तैयार होगा। तथा सब्जियों का पोषक मूल्य भी अधिक होगा। कार्यक्रम में सोरू हीरात्सुका, यूनिडो, जापान द्वारा बताया गया कि प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यमियों, किसानों तथा शोध छात्रों का कौशल विकास किया जाएगा जो रोजगार सृजन में सहायक होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के कोर्स निदेशक डॉ पी के सिंह द्वारा कहा गया कि जापानी तकनीक आईमेक का प्रयोग कर पारंपरिक हाइड्रोपोनिक प्रणाली की तुलना में 90% तक पानी की बचत की जा सकती है। शाकभाजी अनुभाग के प्रभारी डॉ केशव आर्य द्वारा कहा गया कि आईमेक तकनीक को समस्या ग्रस्त मिट्टियों तथा रेतीली भूमियों में भी प्रयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम के कोर्स समन्वयक डॉ राजीव द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया गया कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न शोध संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली से संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम में डॉ हिरोशी योशिओका, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ सुशील यामाहामोतो, जापान डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, डॉ वी के त्रिपाठी अधिष्ठाता उद्यान संकाय उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों के रूप में 6 उद्यमी, 20 प्रगतिशील किसान तथा 11 शोध छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया।